शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'चाक' उपन्यास में चित्रित नारी संघर्ष

लविना निनामा
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

प्रसिद्ध महिला लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' सबसे चर्चित उपन्यास है। 'चाक' अर्थात वह गोल पत्थर जो एक कीले पर घूमता है। जिस पर गीली मिट्टी को रखकर कुम्हार उसे आकार देता है। नयारूप बनने के लिए मिट्टी को कितनी यातना सहनी पड़ती है। ग्राम्य जीवन पर आधारित इस उपन्यास में समाज की कठोर सच्चाईयों को लेखिका ने उजागर किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण जीवन में नारी के संघर्ष की चर्चा की गयी है

भूमिका

'चाक' उपन्यास मैत्रेयी पुष्पा का सबसे चर्चित उपन्यास रहा है। इस उपन्यास में लेखिका ने ग्राम्यांचल के जन-जीवन का बड़ी ही मार्मिकता से चित्रण किया है। ग्रामीण सुलभ सहजता एवं अंचल की यातनाएँ, समाज की कठोर सोच आदि विषेषताएँ इस उपन्यास में है। इस उपन्यास की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण ग्रामीण जीवन में रहते हुए नरियों का अपने व्यक्तितव का उभारने के लिए किया जाने वाला संघर्ष है।

चाक उपन्यास में नारी संघर्ष

अतरपुर गाँव किसानों का गाँव है और जैसा है वैसा ही रहना चाहता है। वह हर बदलाव का विरोधी है। यथास्थिति में जब-जब परिवर्तन होता है, कुछ मूल्य और विश्वास टूटते हैं। हर विकास परंपरागत मान्यताओं को बदलता और तोड़ता है। इस कहानी की नायिका सारंग एक किसान की पत्नी है। सारंग नही जानती कि वह इस परिवर्तन की शिकार है या सूत्रधार। पिछड़े इलाकों के अतरपुर गाँव, परिवर्तन की प्रमुख धारा से अछूते नहीं हैं। अपने रीति-रिवाजों, जाति-संघर्षो, गीत-उत्सवों, नृशंसता-प्रतिहिंसा, प्यास-ईर्ष्या और कर्मकांड अंधवि श्वासों के बीच धड़कता हुआ अतरपुर गाँव सारंग और रंजीत के आपसी संबंधों के उतार-चढ़ाव में समय को आत्मसात कर रहा है। सारंग के परिवार में पति रंजीत , बेटा चंदन और ससुर गजाधर है इसके अलावा जेठ दलवीर, बहन रेशम और अन्य सदस्य भी हैं।

सारंग उस गाँव की बहू है जहाँ बड़े-बूढ़े , सेठ-पंडित, ऊँची-नीची जातियों के तमाम पुरूष-महापुरूष न्याय के संरक्षक न होकर अन्याय के समक्ष गूंगे, तमाशबीन दिखाई देते हैं। औरतें छल से मारी जाती हैं। ऐसे ही छल से सारंग की फुफेरी बहन रेषम मार दी जाती है। सारंग ने प्रण लिया कि जब तक वह हत्यारे को हथकड़ी नहीं लगवा देती अपने बाल नहीं बाँधेगी। सारंग विद्रोह की आग पर चलने लगी। ऐसा कहा जाता है कि जो आग पर चलना सीख लेता है वह कुंदन हो जाता है। उसके मन पर पुरूष अत्याचारों के अनेक बिंब खुदे हैं। बहु विवाह करने वाले अनाचारी पिता और वैसे ही भ्रष्ट संरक्षक बेटियों को गुरूकुल की कैद में डालते हैं।

यहां गाँव की स्त्रियों को अलग-अलग गलती करने पर एक-सी सजा दी जाती थी। जैसे मणि और शास्त्रीजी को नहीं शारदा और शकुन्तला को समान गलती पर जीवनघाती कष्ट झेलने पड़ते हैं। अजीब नैतिकता है - "मर्द औरत को छूता है तो उसका उद्धार कर देता है औरत मर्द को छुए तो उसे पाताल में डुबो देती है। "1 पौराणिक धारणा है कि श्रीकृष्ण ने गोपियों के संग नही वेद की ऋचाओं के संग जलक्रीड़ा की थी। गोपियाँ हथिनियाँ बनी , भगवान को जलक्रीड़ा कराई और मोहन-मुरारी को छूकर पवित्र हुई। सारंग जटिनी है। गुरूकुल से पढ़ी है। लोहे की बनी है। हिम्मत और साहस की मालकिन है। वह अपने जीवन-रथ की स्वयं सारथी है। यह जानकर भी कि पुरूषों की दुनिया में हस्तक्षेप करना आग पर चलना है , उनकी बराबरी की कामना करना खतरे की घंटी बजाना है- फिर भी वह हिम्मत नहीं हारती। रे शम और उसके अजन्मे बच्चे के हत्यारे , उसका अपमान करने वाले, चंदन को उसकी बाहों से झटक लेने वाले डोरिया को वह कुश्ती के बहाने कैलासी सिंह से पिटवाकर ही चैन लेती है। उसे प्रताड़ित करने वाले और मास्टर श्रीधर की पिटाई करने वाले पति के प्रति विद्रोह में मानो श्रीधर से उसके संबंध स्थापित हो जाते है। उसके प्रति सभी का विरोध रहता है। फिर भी वह हिम्मत नही हारती। वह गाँव की हर दुखित नारी के लिए संघर्ष करती है। गांव की गुलकंदी और हरिप्यारी को जिंदा जला देने का दर्द कोई भूलाने की बात नहीं। मनोहर की बहू को जिस तरह मिर्चो के धुंएँ पर औंधाया गया। इस गांव में दहशत के बदरंग छोड़ते उसे चैन नहीं लेने देते। पति रंजीत सारंग से बेटे को बार-बार छिनता है। वह जानती है, कि गद्दारी, पाप और अधर्म की सजा औरतों को अवसर ढूंढ-ढूंढकर दी जाती है। लौंगसिरी बीबी का पति रखैल रख लेता है। कलावती चाची का पति घर से भाग पत्नी को जीवन संघर्षों के लिए अकेले छोड़ देता है। थानासिंह 40 वर्षीय भाई के लिए 15 वर्षीय बैकुंठी खरीदता है और राममूर्ति को बदनाम करने के लिए भूरा गली में उसका हाथ पकड़ लेता है। यह सारी स्थितियाँ समाज में व्याप्त पुरूषों की मनःस्थिति को दर्शाती है। जो एक स्त्री को अपनी स्वतंत्रता की इजाजत नही देता। सारंग भी अपने पति के द्वारा प्रताड़ित स्त्री है। जिसका पति उसे घर की देहलीज से बाहर निकलने नही देना चाहता। पति के स्थान पर चुनाव का पर्चा भरने के कारण उसके दाम्पत्य जीवन, सात फेरों वाली संस्कृति एवं स्त्री धर्म को अस्वीकारने का प्रश्नचिन्ह लगाया गया। श्रीधर के साथ उसके संबंध गांव वालों की नजरों में पति विद्रोह है। 'चाक' में गजाधर बाबू जैसा भी एक इंसान है , जो स्त्रियों पर होते अधर्म को नही देख सकता। वह रंजीत से सारंग के विषय में स्पष्ट कह देता है- "तू श्रीधर के साथ घात न करता , रंजीत! तो सारंग उसका मुआवजा न भरती।"...नादान तू पहले बहू के काबिल बन। ऐसा उचक्कापन करेगा तो कौन-सी औरत गले लगा लेगी।"2

'चाक' उपन्यास के माध्यम से हमारे सामने ग्रामीण जीवन का वह रूप सामने आता है , जिसकी कोई कल्पना भी नही कर सकता। चाक की नायिकाओं ने वेदना और आँसू का आलाप छोड़कर संघर्ष की भूमि अपनाई है। उपन्यास में अलग-अलग त्यौहार आए हैं। जिनमें लोग गाते-बजाते है। अनेक प्रकार के शगुन करते है। दुश्मन को भी मुबारक देते हैं। रक्षाबंधन पर दंगल होता है। जन्माष्टमी को हिण्डोले डाले जाते हैं। चट्टाचौथ को मास्टर बच्चों के संग प्रमुख घरों में

जाकर सत्कार और शगुन ग्रहण करते हैं। पितृ अमावस्या को पितरों का तर्पण किया जाता है। करवाचौथ को कथा कही जाती है। बसंत पंचमी को मेला लगता है। दिवाली को दीप जलाए जाते हैं। होली में रंग डाले जाते हैं। गीतों में लोक-कथाओं की करूणा है। ये सभी प्रसंग कुछ ऐसे दर्द लिए हैं, मानो विद्रोह भाव को ही जाग्रत कर रहे हों।

समय बदल गया है। पुरूष प्रधान समाज में बदलाव होना चहिए। शहर व महानगरों में तो यह बदलाव दिखाई देता है। किंतु आज भी कुछ गांवों के सामाजिक परिवेष में बदलाव नही आया है। वहाँ आज भी नरियाँ शोषित है। 'चाक' उपन्यास का चाक ब्रज प्रदेश के किसानों के बीच घूमता है , जो कभी बदलना या बदलाव नही चाहते। वैसे भी आरंभ से ही पुरूषों ने स्त्रियों को दबाना चाहा है। हमारा समाज पुरूष प्रधान कहा जाता है। नारी पुरूष का विरोध नही करना चाहती बस वह केवल उसकी सहयोगी बनना चाहती है। सारंग भी अपने पति की हिम्मत बनना चाहती थी वह उसे समय-समय पर हिम्मत देती है- "भटको मत रंजीत, ऊँचाइयाँ न सही, जमीन तो है।"3

पति के न समझने पर वह स्वयं चुनाव के समय प्रधान का पर्चा भरती है। बेटे से अलगाव का दर्द इतना अधिक था कि वह स्वयं बंदूक उठा लेती है। श्रीधर भी सारंग को हिम्मत देता है- "तुम्हारे मन मे विक्षोभ की एक चिंगारी छिटकी, यही क्या कम है? लपटें भी उठेगी, जो छीन लेगी अपने हक को।"4

सारंग का विद्रोह यौन-नैतिकता के दोगले मानदंडों के विरूद्ध ग्रामीण द्वेषों के विरूद्ध है। पति द्वारा मिलने वाला अपमान और वात्सल्य से बिछोह उसे और भी विद्रोही बना देता है। सारंग की विडम्बना ऐसी कि अकेली औरत कैसे समाज के बनाए सारे नियम तोड़ सकती थी। तोड़ने की को शिश मात्र से ही उसे समाज ने कुलक्षिणि घोषित कर दिया। आज के नैतिक मूल्यों की पड़ताल सारंग, रेशम, गुलकंदी, लौंगसिरी बीबी, कलावती चाची, राममूर्ती, बैकुंठी के हाथो से फिसलता जा रहा था। ऐसे में कैसे वे अश्लीलता के आरोप से बच पाती।

अतरपुर गांव एक युद्धक्षेत्र से भी भयंकर है। कोर्ट कचहरी में गरीब लोगों की कहा चलती है। बड़े लोग के लिए कोर्ट एक खिलौने की तरह हो गया है। इस गांव में कायरता भरी पड़ी है और इसी कायरता के पीछे गुंडे बनते है। मास्टर श्रीधर को पीटा जाता है। रंजीत पर भूरा द्वारा हमला करवाया जाता है। गुलकंदी, हरिप्यारी और बसुदेव को जिंदा जला दिया जाता है। फतेहसिंह हो या साधजी सब उस कुएं के मेंढक के समान है जो न खुद आगे बढ़ते है और न दूसरों को आगे बढ़ने देते है। तोता की बहू रेशम के पक्ष में गवाही नहीं देती तो रिश्वत के तौर पर उसका घर पक्का करवा दिया जाता है। जेल जाना यहाँ सम्मानसूचक माना जाता है। कुंवरपाल रंजीत से कहता है- "चुनाव में उम्मीदवारी की लिस्ट में सबसे पहले वह आता है , जो जेल हो आया हो। हमारे-तुम्हारे जनम से पहले से चली आ रही है यह बात है, और तुम अब तक अंधेरे में हो।"

'चाक' उपन्यास की नायिका सारंग ग्रामीण परिवेश में जीते हुए भी कई लक्ष्मण रेखाओं को तोड़ती हुई आगे बढ़ती है। उसे उसके मातृत्व ने अधिक विरोधी बना दिया था। उसने गांव की स्त्रियों को भी कई समस्याओं से लड़ते और हारते हुए देखा था। उसका संघर्ष इसी बीच , कुछ नैतिक मूल्यों के लिए संघर्ष होते देख शुरू हुआ। उसे नहीं पता था कि बाहर की स्त्रियों के साथ

जब कुछ गलत होता है तो कैसा लगता है ? वह सिर्फ एक अनुभूति मात्र थी उसके लिए , किन्तु जब उसने स्वयं उस अनुभूति को जिया तब उसे पता चला कि एक स्त्री की वास्तविक स्थिति क्या होती है। ग्रामीण जीवन अपनी सादगी के लिए जाना जाता है। अतरपुर जैसे गांव जिसकी मानसिकता सामाजिक परिवेश इतना भयावह हो वहां कोई क्यों न विद्रोही हो ? यहां नारी मुक्ति का मतलब नैतिकता और संस्कारों से मुक्ति नही है। यहां बात एक स्वतंत्र अस्तित्व की है।

निष्कर्ष

इस प्रकार के सामाज के लिए सारंग का विद्रोह करना आवश्यक था। इस स्वतंत्र भारत में गांव के लिए निर्मल ग्राम की कल्पना की गई है। जिसमें गांव की सफाई विशेष उद्देश्य है। किन्तु यदि मन की सफाई न हो तो वहां कैसी सफाई ? लेखिका ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से हमारे सामने ग्रामीण समाज का एक विध्वंसक रूप प्रस्तुत किया है। अब हमें तय करना है कि हम ऐसे समाज को बदलने में अपना सहयोग किस प्रकार दे सकते है ? क्योकि आज भी कुछ अदृश्य लोगो के माध्यम से यह लड़ाई जारी है। किन्तु कुछ स्वार्थी लोगों के कारण वे लोग सफल नही हो पा रहे हैं। ऊपर बैठे शिकारी लोग तीर-कमान साधे उनका शिकार करने का सुख पाते है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 चाक (उपन्यास), मैत्रेयी पुष्पा